ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे   निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26   अंकः 22   बुलेटिन अवधिः 18–22 मार्च, 2017   दिनः शुक्रवार   दिनाँकः 17 मार्च 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल**				
	18–03–2017	**19–03–2017**	**20–03–2017**	**21–03–2017**	**22–03–2017**
वर्षा (मिमी0)	0	0	5	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	18	19	16	17	18
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	05	05	04	04	05
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	घने बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	75	80	85	75	75
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	35	35	40	35	35
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	06	04	04	08	10
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (10 से 16 मार्च 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही घने बादल छाये रहे व 13.0 मिमी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 8.2 से 17.8 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 1.0 से 5.5 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ गेहूँ की फसल मे चूर्णिलासिता का प्रकोप दिखाई पड़ने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई0 सी0 का 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ गेहूँ की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा कीड़े एवं अन्य बीमारियों के प्रकोप हो रहा हो तो अनुमोदित कीटनाशियों का प्रयोग करें।
- ❖ सरसों की फसल की कटाई एवं मड़ाई करें।

- किसान भाई बसंत कालीन गन्ने की बुवाई 15 मार्च तक पूरा कर लें।
- गन्ने की अनुमोदित प्रजातियों का चुनाव अपने क्षेत्र के अनुसार ही करें।
- गन्ने के टुकड़ों का बीज शोधन अवश्य करें। शोधन ऐगलाल या इमासान 6 के 0.25 प्रतिशत घोल में 10 मिनट तक डुबाकर रखने के बाद ही बुवाई करें।
- गन्ने के टुकड़ों की दीमक से रोक–थाम के लिए 5 मीटर गामा बी0एस0सी0 या लिंडेन को 700 लीटर पानी में घोलकर हजारें से टुकड़ो के ऊपर छिड़काव करें तथा गन्ने के टुकड़ों को मिट्टी से दबा दें।
- गन्ने में खरपतवारों के नियंत्रण हेतु वैल्लोर के4 दवा की 2 कि0ग्रा0 मात्रा 750 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 3 दिन के अंदर या 15 दिन के बाद प्रयोग करें।
- इस दवा के उपलब्ध न होने पर ऐट्राजीन की 4 कि0ग्रा0 मात्रा अथवा मैट्रीब्यूजीन की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 750 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई के 3 दिन के अंदर छिड़काव करें।
- बसंत कालीन गन्ने के लिए 120 कि0ग्रा0 नत्रजन, 60 कि0ग्रा0 फासफोरस तथा 40 कि0ग्रा0 पोटाश का प्रयोग करना चाहिए। नत्रजन की 1/3 मात्रा तथा फासफोरस व पोटाश की पूर्ण मात्रा बुवाई के समय प्रयोग करें।
- प्रति हैक्टेयर बुवाई के लिए गन्ने के तीन आँख वाले 40–45 हजार टुकड़ों का प्रयोग करें।
- गेहूँ में यदि माहू का प्रकोप हो तो थायोमेथाक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0 50ग्राम/है0 या क्यूनॉलफास 25 ई0सी0 एक लीटर/है0 की दर से छिड़काव करें।
- सरसों में माहुं का प्रकोप होने पर थियामेथोक्जाम 25 डब्लूएसजी 50–100 ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे। इसकी प्रतीक्षा अवधि 21 दिन है।

उद्यान प्रबन्धः

- सिंचित घाटी क्षेत्रो में सब्जी फ्रासबीन किस्म अर्का कोमल या कन्टेण्डर की वुबाई करे।
- कीड़ो एवं रोगों के निराकरण हेतु फूल आते समय नियंत्रक दवाईयों का प्रयोग कतई न करें। इससे मधुमक्खियों के मरने का डर रहता है।
- बगीचे में काट–छॉट का काम पूरा कर लें।
- पर्वतीय घाटी क्षेत्रो में आलू की किस्म कुफरी ज्योति की बुवाई करे। यदि वुबाई फरवरी माह में की गई हो तथा आलू जम गया हो तो मिट्टी चड़वा दें तथा आवश्यक्तानुसार सिंचाई करें।
- ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रो में आलू की वुबाई करें तथा मिट्टी चढ़ाने के तुरन्त पश्चात् नालियो में पलवार की एक मोटी परत बिछा दे। ताकि लम्बी अवधि तक नमी संरक्षण हो सके।
- ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में जहाँ पर बर्फ पिघल रही है नत्रजन खाद की प्रथम आधी मात्रा शीतोष्ण फल वृक्षो के थालों में प्रयोग करें।
- शीतोष्ण फल प्रजातियों के फल के बगीचों में फूल आने पर परागण हेतु मधुमक्खियों के बक्सों को लगभग 2–3/है0 की दर से रखें।
- टमाटर में झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू0पी0 का 2.5 ग्राम/ली0 की दर से छिड़काव करे।

पशुपालन प्रबन्धः

- मुर्गियों के अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आवास के तापमान का विशेष ध्यान रखें, उन्हें खाने के लिए सन्तुलित आहार दें तथा साफ–सुथरा एवं ताजा जल उपलब्ध करायें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए ताकि उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें। बैठने का स्थान समतल ना होने पर पशु खड़ा रहेगा जिससे वह तनाव में आ सकता है और उत्पादन क्षमता प्रभावित होगी।
- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के बैठने के स्थान पर सूखा चारा अथवा सूखी घास बिछा दें। प्रसव के उपरांत पशु पालक स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होना, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरो का गोबर के साथ आना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान की जा सकती है। रोग की

पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं तथा निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार तत्काल उपचार करायें।

- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिलाना लाभकारी होता है। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर